॥ श्री ॥

# जिनशतक

JINASHATAKA

**आ. समन्तभद्र** · ४वीं शती · अभिलेख १८/९०

आ. समन्तभद्र → श्री पात्र केसरी स्वामी

## संक्षिप्त परिचय

स्वामी समन्तभद्र कृत सौ पद्यों की जिन-स्तुति — स्तुतिविद्या नाम से भी प्रसिद्ध; चित्रबन्ध आदि अलंकारों के चमत्कार के लिये विख्यात काव्य।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

## अभिलेख-विवरण

जिनशतक — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक १८ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. समन्तभद्र; रचना-काल ४वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ६८) के अनुसार इनका समय १२०–१८५ है। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "आप्तमीमांसा/आदि अनेकग्रंथ" उल्लिखित है। इसी लेखनी से रत्नकरण्ड श्रावकाचार, आप्तमीमांसा, युक्त्यनुशासन, स्वयम्भूस्तोत्र, देवागमस्तोत्र, द्वात्रिंशिका भी इस सूची में सम्मिलित हैं।

इसी लेखनी से

रत्नकरण्ड श्रावकाचार · आप्तमीमांसा · युक्त्यनुशासन · स्वयम्भूस्तोत्र · देवागमस्तोत्र · द्वात्रिंशिका

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति १८ — मूल छायाचित्र